West Champaran

केस स्टडी

गाँव विकास समिति का एक प्रयास
कुँआ से चलती जिन्दगी

टोला– **हरिजन टोला**
गॉव– **तेल्हुऑ**
पंचायत– **दक्षिण तेल्हुँआ**
प्रखण्ड– **नौतन**
जिला– **प0 चम्पारण (बिहार)**

<u>कुऑ का इतिहास :–</u>

हरिजन टोला एक दलित समुदाय की बस्ती हैं। यहॉ के रहने वाले लोग दूसरे बाहरी गॉव से आये थे। गॉव में जब एक भी कुऑ नही था तो लोग बगल के स्वतंत्रता सेनानी जयपाल ठाकुर के द्वारा बनवाये गए कुँए से पानी लाते थे। पानी भरने और लाने में बहुत कष्ट होता था। बीच में छुआ–छुत की भावना से लोगो को प्रताड़ित होना पड़ता था। तब हरिजन टोला गाँव के रहने वाले कोकिल राम के द्वारा ग्रामीणो के सहयोग से गॉव में कुऑ का निर्माण हुआ। सन् 1954 ई0 से 1993 ई0 तक कुऑ सुचारू रूप से चलता रहा। उस समय पीने के लिए पानी का साधन मात्र एक कुऑ ही था। सन् 1993 ई0 में जब भयंकर बाढ़ आया तो कुऑ के उपर तीन फीट पानी बहने लगाा। कुऑ में बाढ़ का पानी समा गया एवं कुऑ में कुड़ा–कचरा भी भर गया, जिससे कुऑ का पानी खराब हो गया। फिर यह कुँआ पूरी तरह से बंद हो गया।

<u>गाँव में चापाकल का प्रवेष :–</u>

धीर–धीरे जब चापाकल का प्रचलन हुआ तो लोग अपने–अपने घरों में एवं दरवाजे पर चापाकल गड़वा कर पानी पीने लगे। सरकार द्वारा भी बहुत से सरकारी चापाकल गड़वाए गए। जिसकी गहराई 100 फीट तक होता था। लोग उत्साह मे थें कि बिना परिश्रम किए आसानी से पानी मिल जा रहा है। लोग कुऑ को बेकार की चीज समझने लगे तथा कुँआ का उपयोग करना छोड़ दिये।

<u>दूषित जल का प्रभाव :–</u>

चापाकल के पानी पीने से लोगो के पेट में गैस्टिक, ल्यूकोरिया, भूख नहीं लगना, पेट दर्द, सिर में चक्कर इत्यादी बिमारीयॉ उत्पन्न होने लगी। लोगों का अधिक पैसा बिमारी पर खर्च होने लगा। जो भी मेहनत मजदूरी से पैसा आता था वह सब बिमारी पर खर्च हो जा रहा था।

लोग चपाकल का पानी पीने से अस्वस्थ्य रहने लगे। स्वच्छ पीने के पानी का कोई विकल्प दिख नहीं रहा था।

<u>बंद कुआँ चालू करने की सोच :–</u>

अभियान के साथियों द्वारा 2007 से बंद कुआँ और सरकारी चापाकल के पानी की जॉच अमरूद के पत्ता द्वारा तथा जलतारा किट से किया गया तो पाया गया कि बंद कुआँ का पानी चपाकल के पानी की अपेक्षा ज्यादा बेहतर है। गॉव वाले के बीच में पानी की गुण्वता पर चर्चाए होती रही। अन्ततः लोगों को एक बात समझा में आने लगी कि जब बंद कुँआ का पानी चलते हुए चपाकल के पानी से ज्यादा बेहतर है तो क्यों न हम सभी लोग मिलकर कोकिला राम के बंद कुँआ को फिर से चालू करे। बंद कुँआ की सफाई–उड़ाही के बाद पीने के लिए काफी बेहतर स्वच्छ एवं शुद्ध पानी मिल सकता है। परिणामतः गाँव के लोगों की यही सोच कुँआ को पुनः जीवित करने में कामयाब हुँआ। आज यह कुँआ इलाके में एक उदाह्रण बना हुआ है।

<u>गाँव विकास समिति का योगदान :–</u>

हरिजन टोला गाँव के सभी 130 परिवार से एक–एक व्यक्तियों को लेकर एक सभा हुई। जिसमें गाँव वालों ने कुआँ को पुनः जीवित करने के लिए संकल्प लिया। इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने की जिम्मेवारी गाँव विकास समिति को दिया गया। गाँव विकास समिति की बैठक में 7 लोगों की एक टीम बनाई गई जो गाँव के प्रत्येक परिवार से चन्दा इक्कठा करेगी। कुआँ मरमम्ती कार्य के लिए 10,500/– रू0 का अनुमानित बजट तैयार हुआ। जिसको गाँव विकास समिति एवं अभियान के साथियों के द्वारा बनाया गया था। इसमें से 7,000/– रू0 अभियान द्वारा सहयोग करने एवं 3,500/– रू0 गाँव वालों के द्वारा सहयोग की सहमती बनी थी। जिसके आधार पर कुँआ के पुनः उद्धार का कार्य सम्पन्न किया गया।

<u>कुआँ की मरम्तती उड़ाही एवं सफाई :–</u>

कुआँ जब तैयार हुआ तो उस समय तक 10,750/– रू0 का लागत आया था। जिसमें गाँव वालों से 3,775/– रू0 नकद एवं श्रमदान के रूप में सहयोग रहा था। कुआँ के चारों तरफ 5 फीट का चबुतरा बनाया गया तथा चबुतरा के उपर से 3 फीट का दीवाल उठाया गया (लहरा)। कुआँ का पानी जल तारा किट से तीन बार जाँच करके उसके परिणामों को एक दिवाल पर लिखा गया। पानी जाँच रिर्पोट के मुताबिक पीने के सभी मानकों को यह कुँआ पूरा करता है। इसके उड़ाही/सफाई में गाँव के सभी लोागों का शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक सहयोग रहा है।

West Champaran

कुआँ के स्वच्छ जल का उपयोग :–

कुआँ के पानी को गाँव के सभी 130 परिवारों में उपयोग होने लगा। लोगों को यह पूरा विष्वास हो गया कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए कुँआ का पानी ही सस्ता और सुलभ माध्यम है। लोग सुबह और शाम कुँए पर पानी भरने के लिए कतार लगाए रहते है। बच्चे तो दिन भर गर्मी के दिनों में स्नान करने के लिए भीड़ लगाए रहते है। गाँव की महिलाएँ बाल्टी से पानी को भरकर सुबह और शाम अपने घरों में रखने के लिए घड़ा का भी इस्तेमाल करती है। कुँए के रख–रखाव एवं निगरानी की जिम्मेवारी स्थानीय गाँव विकास समिति के सदस्यों की होती है।

कुआँ जल का प्रभाव :–

अप्रैल 2009 में एक घटना है जब दक्षिण तेल्हुआ पंचायत के पूर्व मुखिया श्री रामचन्द्र सहनी के पेट में अचानक दर्द शुरू हो गया। उसी समय अभियान से संबंधित कुछ बात रकने के लिए एक क्षेत्रीय कार्यकर्ता उनके घर पहूँचे तो मुखिया जी के आस–पास लोगों का भीड़ दिखाई दिया। सभी लोग उनको लेकर अस्पताल जाने की तैयारी में थे। तभी अभियान के साथी द्वारा उनके पेट के दर्द की स्थिति को जानकर एक सुझाव दिया गया कि आधे घंटे के लिए इनको रोक कर रखा जाय, इनको हरिजन टोला के कुँए से पानी लाकर पीला दिया जाय। जिससे इनका पेट का दर्द ठिक हो सकता है। लोगों को इस बात पर भरोसा नही हो रहा था फिर भी कुछ लोग यकिन करते हुए एक कंटेनर में पाँच लिटर पानी हरिजन टोला गाँव के कुँए से लाया गया। फिर मुखिया जी को 500 मिलिलिटर के लगभग पानी पिलाया गया। दस मीनट के अंदर मुखिया जी का पेट दर्द ठिक हो गया। तब वहाँ उपस्थित करीब सैकड़ों लोगों में कुँआ के स्वच्छ एवं शुद्ध पानी के उपर भरोसा हुँआ और वहाँ उपस्थित सभी लोग उस कंटेनर के पानी को पीये। लोगों के बीच में यह एक चमत्कार जैसा दिखाई दिया। लेकिन यह कोई चमत्कार नहीं था, यह तो सिर्फ आयरन, आर्सेनिक, कोलीफार्म, फ्लोराईड़, क्लोराईड़, नाईट्रेट, कठोरता व अन्य की अनुपस्थिति के वजह से कुँआ का स्वच्छ एवं शुद्ध पानी का कमाल था। इस कुँए को मौजुदा स्थिति में रखने में वहाँ के गाँव विकास समिति का महत्वपूर्ण योगदान था। जिसके लिए मुखिया जी के दरवाजे पर उपस्थित सैकड़ों लोगों ने गाँव विकास समिति के द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य की सराहना की तथा उनको बधाई दी।